ऐतिहासिक पर्यटन के विकास में निर्वचन की भूमिका

(दिल्ली राज्य के 12वीं से 20वीं शताब्दी के मध्य निर्मित स्मारकों के संदर्भ में)

The Role of Interpretation in the Development of the Historical Tourism

(In Special Reference to the Monuments of 12th to the 20th Century in the State of Delhi)

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की

एम.फिल. उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबंध

शोधार्थी

अनुज कुमार गौतम

पंजीयन संख्या : 2016/04/219/003

सत्र : 2016 - 17

अनुवाद अध्ययन विभाग

अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

गांधी हिल्स, वर्धा- 442001 (महाराष्ट्र), भारत

भूमिका

भारत विश्व के प्राचीन देशों में शामिल एक ऐसा देश है, जहाँ की संस्कृति और इतिहास इसकी ऐतिहासिक पहचान को दर्शाते हैं। जब कोई भी इसके बारे में सोचता है तब यहाँ की विभिन्न प्रकार की संस्कृति उसे सदैव आकर्षित करती है। यहाँ की हवाओं में उस जगह का इतिहास बसता है। अब इसकी 29 प्रशासनिक इकाइयाँ हैं और प्रत्येक का अपना महत्व है, जिसे हर कोई महसूस करना चाहता है। इतिहास की विशाल गाथाएँ यहाँ बने स्मारक ज़ोर-ज़ोर से सुनाते हैं, जिन्हें सुनने और महसूस करने के लिए हर वर्ग का पर्यटक लालायित रहता है।

ऐसी ही कुछ कहानियाँ दिल्ली के साथ जुड़ी हैं। "महाभारत की कथा के अनुसार यहाँ पहले बियावन जंगल था और कौरव-पांडव के बीच क्षेत्र विभाजन में यह पांडवों को दिया गया था। तब इसका नाम 'खांडव वन' था। पांडवों ने अपने पुरुषार्थ से यहाँ एक अद्वितीय नगर की स्थापना की और इसका नाम 'इंद्रप्रस्थ' रखा। यहाँ के भवनों का निर्माण उस

समय के सर्वश्रेष्ठ वास्तुकार मय ने किया था।"[1] यह वही स्थान है, जहाँ आज पुराना क़िला है। दिल्ली एक गरिमा मंडित शहर है। अनेक विद्वत जनों ने इसकी प्राचीन गरिमा को आकार दिया है। अमीर खुसरो ने इसकी तुलना 'स्वर्ग-लोक' से की है। इसकी भव्यता का वर्णन और भी अनेक लेखकों ने अपने-अपने ढंग से किया है।

प्रसिद्ध है कि "इन्द्रप्रस्थ के गौतम वंशीय राजाओं के परवर्ती मयूर वंश में अंतिम राजा दिलू हुआ। वह कन्नौज़ का राजा था। उसने दिल्ली पर आक्रमण करके विजय पाई थी और यहाँ स्वरूपदत्त नामक राज्यपाल की नियुक्ति की थी। स्वरूपदत्त ने इन्द्रप्रस्थ के खंडहरों पर एक नया नगर बसाया और राजा के नाम पर इसका नाम 'दिलू' रखा था। सन् 736 में तोमर राजपूतों ने पहली बार दिल्ली को विधिवत बसाया और इसका नाम 'ढिल्ली' या 'ढिल्लिका' रखा"[2]। इसके बाद पृथ्वीराज चौहान ने लाल कोट को एक क़िले में बदल कर उसका नाम 'क़िला राय पिथौरा' कर दिया और उसे अपनी राजधानी बनाया। यह दिल्ली का पहला ऐतिहासिक शहर था। आज इसके अवशेष ही शेष हैं। इसके बाद विभिन्न शासकों ने इसे बसाया, जिन्हें क्रमशः सीरी, तुगलकाबाद, जहाँपनाह, फ़ीरोजाबाद, दीन पनाह, शाहजहाँबाद, दिल्ली, नई दिल्ली आदि नामों से जाना गया।

एक वक़्त था, जब यह वीरान जगह थी। जंगली जानवरों की आवाज़ें दूर-दूर तक सुनाई देती थी। एक ख़ामोशी सदा पसरी रहती थी। इस ख़ामोशी की आवाज़ आज भी गूँजती है। यहाँ अरावली की पहाड़ी के आस-पास तोमर राजपूतों के और अफ़गान शासकों के खंडहर बिखरे पड़े थे।

शासन की दृष्टि से तुर्क शासक मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज चौहान को हराकर यहाँ शासन किया, लेकिन उसे यह शहर रास नहीं आया। उसने कुतुबुद्दीन को यहाँ भेजा, जिसने शासन करना शुरू कर दिया। यहीं से मुस्लिम वंशों के शासन का प्रारंभ हुआ। दिल्ली पर ममलूक या गुलाम वंश (1206-1290), खिलजी वंश (1290-1320), तुगलक वंश (1320-1414), सैयद वंश (1414-1451), लोदी वंश (1451-1526), मुग़ल वंश (1526-1858) आदि ने शासन किया। सन् 1857 के बाद यहाँ अंग्रेज़ों के शासन का नियंत्रण रहा, जिन्होंने बाद में इसे राजधानी भी बनाया। स्वाधीनता मिलने पर यह नगर स्वतंत्र भारत की राजधानी बना। दिल्ली के सभी शासकों ने अपनी गौरवमयी परंपरा और उपलब्धियों के प्रतीक के रूप में क़िले, मीनार, मस्जिद, मकबरे, द्वार, संग्रहालय आदि का निर्माण किया। ऐतिहासिक स्मारकों के रूप में वह सब हमारी वर्तमान पीढ़ी के सामने है। स्मारकों की निर्माण-योजना और स्थापत्य-कला एक कालखंड विशेष को जीवंत करने के लिए पर्याप्त है।

[1] पाण्डेय,मंजु. (2000). दिल्ली अतीत के झरोखे से. पृ.सं. 1
[2] वही. पृ.सं.1

जब भारत में पर्यटन की ओर ध्यान केंद्रित किया गया, तब दिल्ली में ऐतिहासिक स्मारकों के माध्यम से ऐतिहासिक पर्यटन की संभावनाएँ बनीं। इसके लिए एक पर्यटन नीति का निर्धारण किया गया, जिसमें ऐतिहासिक स्मारकों के साथ ही भाषा, अनुवाद और निर्वचन की ओर ध्यान गया। हम जानते हैं कि निर्वचन अनुवाद ज्ञानानुशासन की एक ऐसी शाखा है, जिसका इन ऐतिहासिक स्मारकों के व्यवहार से गहरा संबंध है। इसका कारण यह है कि इन स्मारक रूपी ख़ज़ाने को लुटने से बचाने के लिए निर्वचन द्वारा इनकी वैज्ञानिकता को बनाया जा सके, ताकि पर्यटक इन्हें वास्तविक रूप में महसूस कर सकें। तथ्यों की सच्चाई और स्मारकों के निर्माण की अवधारणा का समावेश निर्वचन के दौरान उसकी मौलिकता को ध्यान में रख कर किया जाता है। सैद्धांतिक रूप से किया गया निर्वचन संभवतः ऐतिहासिक स्मारकों और स्थलों संरक्षण में सहायक होगा।

ऐतिहासिक पर्यटन और निर्वचन के इस प्रगाढ़ संबंध को केंद्र में रखते हुए शोधार्थी ने सबसे पहले शोध-समस्या और उसके आधार पर किए जाने वाले शोध-कार्य को संपन्न करने में सहायक शोध-प्रविधि का निर्धारण किया। इसके पश्चात शोध-कार्य की सीमा के आलोक में 12वीं से 20वीं शताब्दी के मध्य निर्मित दिल्ली राज्य के चयनित स्मारकों व उनके परिसर में निर्मित अन्य महत्वपूर्ण स्मारकों का निर्वचनपरक परिचय तैयार किया। इसका उद्देश्य पर्यटक-गाइडों के लिए निर्वचन-सामग्री निर्मित करना और ऐतिहासिक पर्यटन के विकास में निर्वचन की भूमिका को विस्तार देना है। क्षेत्रीय कार्य के दौरान शोधार्थी ने व्यक्तिगत संवाद, प्रश्नावली, साक्षात्कार आदि के माध्यम से जो सामग्री संग्रहीत की थी, उसका विश्लेषण किया। इसी के साथ अध्ययन एवं विश्लेषण के परिणामस्वरूप प्राप्त, ऐतिहासिक पर्यटन में निर्वचन की चुनौतियों का विवेचन किया। ये चुनौतियाँ निर्वचन की भूमिका को समझाने में विशेष सहायक हैं। ऐतिहासिक पर्यटन के विकास में निर्वचन की भूमिका को पुष्ट आधार देने का कार्य कालखंड विशेष की विशिष्ट और पारिभाषिक शब्दावली भी करती है। इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए बारहवीं से बीसवीं शताब्दी की कालावधि से संबंधित स्थापत्य-कला, राजनीतिक सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था, भू-प्रबंधन, सैन्य-व्यवस्था, साहित्य और कला आदि से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली तथा उल्लेखनीय रचनाओं, रचनाकारों, संगीतकारों का निर्वचनपरक परिचय प्रस्तुत किया। समस्त संबंधित मूल सामग्री को परिशिष्ट में स्थान देकर अध्ययन को प्रामाणिक व सुविधापूर्ण बनाने की कोशिश भी की गई।

शोध कार्य से संबंधित आवश्यक सामग्री संकलन के लिए शोधार्थी ने शोध हेतु चयनित स्मारकों की अध्ययन-यात्राएं कीं। इनमें, इंडिया गेट : गेट, कैनोपी, कुतुब मीनार : आलाई मीनार, अलाउद्दीन का मक़बरा एवं मदरसा, ज़ामिन का मक़बरा, उत्तर मुग़ल क़ालीन सराय एवं बाग़, मुग़ल क़ालीन मस्जिद, सैंडरसन की धूप घड़ी, लाल क़िला : प्राचीर एवं खाई, दिल्ली दरवाजा, नौबत ख़ाना, दीवान-ए-आम, मुमताज़ महल, रंग-महल, दीवान-ए-ख़ास, मुसम्मन बुर्ज, हम्माम, मोती मस्जिद, हयात बख़्श बाग़, शाह बुर्ज, नहर-ए-बहिश्त आदि। [वर्तमान में 13 हैं, अवशेषों के आधार पर ज्यादा भी

हो सकते हैं।] हुमायूँ का मक़बरा : शेर मण्डल, नाई का मक़बरा, नीला गुंबद, अफसरवाला मस्जिद एवं मक़बरा, अरब सराय, बु-हलिमा का बाग़ एवं मक़बरा, ईसा ख़ान का मक़बरा एवं मस्जिद, पुराना क़िला : हुमायूँ दरवाज़ा, तालकी दरवाज़ा, क़िला-ए-कुहना, बावली, हम्माम, उत्खनन संग्रहालय आदि की अध्ययन यात्राएँ शामिल हैं। इनमें स्मारक परिसर में बने अन्य महत्वपूर्ण स्मारक भी सम्मिलित हैं। संरक्षण हेतु निर्माणाधीन होने के कारण अनुमति न मिलने से दूर से ही और कुछ स्मारकों के अवशेषों का शोधार्थी द्वारा अवलोकन किया गया और नियमानुसार उनके छाया चित्र लिए। शोधार्थी इनसे जुड़े सभी कर्मचारियों का आभारी है।

शोधार्थी ने सर्वेक्षण कार्य में शोध-विषय से संबंधित कार्यालयों, विभागों, शैक्षणिक संस्थानों, पुस्तकालयों, पर्यटन मंत्रालय आदि जाकर व्यक्तिगत संपर्क किया। जहाँ से सहायता और निराशा दोनों ही मिलीं। भारतीय पुरातत्व विभाग के श्री प्रवीण, पुरातत्ववेत्ता; श्री शिवनाथ, वरिष्ठ सहायक, भारत पर्यटन विकास निगम लिमिटिड; मो. इमरान एवं प्रशांत डोगरा संरक्षण सहायक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण; मो. वासिफ़, सहायक प्रोफ़ेसर और डॉ निमित रंजन चौधरी, विभागाध्यक्ष, पर्यटन विभाग डिपार्टमेंट ऑफ टूरिस्ज्म, होटल, ऑस्पिटेलिटी एंड हेरिटेज स्टडीस, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, विश्वविद्यालय; अमित कुमार त्यागी, पर्यटक सूचना अधिकारी, उत्तरी क्षेत्रीय कार्यालय, पर्यटन मंत्रालय आदि से काफी मदद प्राप्त हुई। इनके द्वारा दी गई सूचनाओं का विवरण परिशिष्ट में उपलब्ध है। इनके अतिरिक्त सर्वे के दौरान जिन देशी-विदेशी पर्यटकों और गाइडों से संबंधित विषय पर चर्चा हुई और जिन्होंने प्रश्नावली के उत्तर दिये, उन सभी का आभार प्रकट करना शोधार्थी का कर्तव्य है।

शोधार्थी यह मानता है कि कोई भी शोध-कार्य सरल नहीं होता। शोधार्थी की बौद्धिक सीमाओं के साथ ही उपलब्ध साधनों की सीमितता तथा विभिन्न स्रोतों से मिलने वाले सहयोग की कठिनाइयाँ स्तरीय शोध में बड़ी बाधाएँ बन कर खड़ी हो जाती हैं। इसी के साथ यदि किसी शोध-कार्य का बड़ा हिस्सा क्षेत्रीय कार्य पर आधारित हो, तो शोधार्थी को और अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसका एहसास इस शोध कार्य के दौरान शोधार्थी को भली-भाँति हो गया। सबसे कड़वा अनुभव तब हुआ, जब पर्यटन विभाग के ही उच्च अधिकारी सुरक्षा कारणों का हवाला देकर मिलने से इंकार करते दिखे। यह असुरक्षा की आशंका इतनी भयावह थी कि शोधार्थी द्वारा अपना विश्वविद्यालय द्वारा जारी पहचान पत्र और विभाग से शोध कार्य से संबंधित कार्यालयों में जाने का अनुमति पत्र प्रस्तुत करने के बाद भी अधिकारियों ने मिलने से इंकार कर दिया। पता नहीं उन्हें एक शोधार्थी से मिलने में इतना खोफ़ क्यों था! अभी तक यह प्रश्न मस्तिष्क को रह-रहकर परेशान कर रहा है। वैसे पर्यटन संबंधी सुधारों की व्यावहारिक स्थिति देखकर अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि पर्यटन-अधिकारी अपनी क्षमताओं का कितना उपयोग इन ऐतिहासिक स्मारकों के संरक्षण और पर्यटन के विकास के लिए कर रहे हैं!

इसके बावजूद यह शोध-कार्य पूरा हुआ, तो इसका बहुत कुछ श्रेय महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. गिरीश्वर मिश्र, अनुवाद अध्ययन विभाग के प्रभारी विभागाध्यक्ष, डॉ. राम प्रकाश यादव, प्राध्यापकों, डॉ. अनवर अहमद सिद्दीक़ी, डॉ. हरप्रीत कौर और विभाग के पहले पोस्ट डॉक्टरल फैलो डॉ. मिलिंद बाबूराव पाटिल को है। मेरे वरिष्ठ पी-एच. डी. शोधार्थियों, श्री बृजेश कुमार चौहान, श्री कुलदीप कुमार पाण्डेय, श्री जीतेन्द्र और सहपाठी आशीष कुमार पाण्डेय और अपर्णा पिराजी माने ने शोध-कार्य में जो सहयोग किया, वह कभी नहीं भुलाया जा सकता।

प्रस्तुत लघु शोध कार्य पूरे आत्मविश्वास के साथ महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की एम. फिल. उपाधि हेतु निर्धारित मूल्यांकन-प्रक्रिया में शामिल करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है।

(अनुज कुमार गौतम)
शोधार्थी, एम. फिल. पाठ्यक्रम
अनुवाद अध्ययन विभाग
सत्र : 2016-17
नामांकन सं. : 2016/04/219/003

अनुक्रमणिका

घोषणापत्र/प्रमाणपत्र

भूमिका

संक्षिप्ताक्षर

अध्याय : एक **1-17**

प्रस्तावना : शोध समस्या एवं शोध प्रविधि

1.1 पृष्ठभूमि
1.2 स्मारक
1.3 पर्यटन : अर्थ एवं परिभाषाएँ
1.3.1 पर्यटन का स्वरूप एवं प्रकार
1.3.2 पर्यटन के प्रकार
1.3.2.1 प्राकृतिक पर्यटन
1.3.2.1.1 मौसमी पर्यटन
1.3.2.1.2 पर्वतीय पर्यटन
1.3.2.1.3 खेल पर्यटन
1.3.2.1.4 मनोरंजन पर्यटन
1.3.2.1.5 वाइल्ड लाइफ पर्यटन
1.3.2.1.6 शिक्षा पर्यटन
1.3.2.1.7 स्वास्थ्य और चिकित्सा पर्यटन
1.3.2.1.8 खनन पर्यटन
1.3.2.1.9 समुद्र तटीय पर्यटन
1.3.2.1.10 अंतर जलीय पर्यटन
1.3.2.1.11 धार्मिक पर्यटन
1.3.2.1.12 सामाजिक पर्यटन
1.3.2.1.13 सांस्कृतिक पर्यटन
1.4 ऐतिहासिक पर्यटन : अर्थ और स्वरूप
1.4.1 परिभाषाएँ
1.4.2 ऐतिहासिक पर्यटन की उपयोगिता

1.4.3 निर्वचन का अर्थ एवं परिभाषाएँ
1.4.3.1 निर्वचन की परिभाषाएँ
1.4.3.2 निर्वचन के प्रकार
1.4.4 ऐतिहासिक स्मारक और निर्वचन
1.4.4.1 निर्वचन के मूल तत्व
1.5 शोध की केंद्रीय समस्या
1.6 शोध के मुख्य प्रश्न
1.7 शोध कार्य का उद्देश्य
1.8 आधार-सामग्री संकलन
1.9 साहित्य पुनरवलोकन
1.10 शोध-कार्य की सीमाएँ
1.11 प्रयुक्त शोध-प्रविधि
1.12 कुँजी शब्द

अध्याय : दो **18-59**

दिल्ली राज्य के ऐतिहासिक स्मारक : निर्वचनपरक परिचय

2.1 कुतुब मीनार
2.1.1 भौगोलिक अवस्थिति
2.1.2 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
2.1.3 निर्माण-विवरण एवं स्थापत्य कला
2.2 तुगलकाबाद किला
2.2.1 भौगोलिक अवस्थिति
2.2.2 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
2.2.3 निर्माण-विवरण एवं स्थापत्य कला
2.3 सिकंदर शाह लोदी का मकबरा
2.3.1 भौगोलिक अवस्थिति
2.3.2 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
2.3.3 निर्माण-विवरण एवं स्थापत्य कला
2.4 पुराना किला
2.4.1 भौगोलिक अवस्थिति

2.4.2 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.4.3 निर्माण-विवरण एवं स्थापत्य कला

2.4.4 पुराने किले में उत्खनन और संग्रहालय

2.5 हुमायूँ का मकबरा

2.5.1 भौगोलिक अवस्थिति

2.5.2 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.5.3 निर्माण-विवरण एवं स्थापत्य कला

2.6 लाल किला या किला-ए-मुबारक

2.6.1 भौगोलिक अवस्थिति

2.6.2 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.6.3 निर्माण-विवरण एवं स्थापत्य कला

2.6.4 लाल किले में स्थापित संग्रहालय

2.6.4.1 भारतीय पुरातत्व संग्रहालय

2.6.4.2 भारतीय युद्ध स्मारक संग्रहालय

2.6.4.3 चीनी मिट्टी के बर्तनों का संग्रहालय

2.7 जामा मस्जिद या मस्जिद-ए-जहाँनुमा

2.7.1 भौगोलिक अवस्थिति

2.7.2 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.7.3 निर्माण-विवरण एवं स्थापत्य कला

2.8 जंतर-मंतर

2.8.1 भौगोलिक अवस्थिति

2.8.2 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.8.3 यंत्रों का विवरण और निर्माण कला

2.9 सफ़दरजंग का मकबरा

2.9.1 भौगोलिक अवस्थिति

2.9.2 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.9.3 निर्माण-विवरण एवं स्थापत्य कला

2.10 इंडिया गेट या अखिल भारतीय युद्ध स्मारक

2.10.1 भौगोलिक अवस्थिति

2.10.2 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.10.3 निर्माण विवरण एवं स्थापत्य कला

अध्याय : तीन **60-96**

ऐतिहासिक पर्यटन : संकलित पाठ-विश्लेषण और निर्वचन की चुनौतियाँ

3.1 शोध-समस्या के अंतर्गत निर्धारित अध्ययन-क्षेत्र से संकलित सामग्री का विश्लेषण।

3.2 संकलित सामग्री के विश्लेषण और शोध-कार्य हेतु किए गए अध्ययन के परिणामस्वरूप उभरी

3.1 शोध-समस्या के अंतर्गत निर्धारित अध्ययन-क्षेत्र से संकलित सामग्री का विश्लेषण

3.1.1 पर्यटक-प्रश्नावली से प्राप्त उत्तरों का विश्लेषण

3.1.2 पर्यटक गाइड प्रश्नावली से प्राप्त उत्तरों का विश्लेषण

3.1.4 पर्यटन पाठ्यक्रम प्राध्यापक के साक्षात्कार का विश्लेषण

3.2.1 ऐतिहासिक पर्यटन : निर्वचन की चुनौतियाँ

3.2.1.1 भाषागत चुनौतियाँ

3.2.1.2 संस्कृति के वास्तविक रूप से परिचित कराने की चुनौती

3.2.1.3 ऐतिहासिक निर्वचन की सैद्धांतिक समस्याएँ

3.2.1.4 प्रेरणा और प्रोत्साहन की चुनौती

3.2.1.5 निर्वचन को प्रामाणिक व प्रासंगिक बनाए रखने की चुनौती

3.2.1.6 जिज्ञासा-शांति एवं संतुष्ट करने की चुनौती

3.2.1.7 प्रशिक्षण संबंधी चुनौती

3.2.1.8 अध्ययनशीलता संबंधी चुनौती

3.2.1.9 व्यावसायिक आचरण के प्रभावशाली होने की चुनौती

3.2.1.10 सूचना और निर्वचन में अंतर की पहचान की चुनौती

3.2.1.11 पर्यटकों के विभिन्न वर्गों के परिप्रेक्ष्य में निर्वचन की चुनौतियाँ

3.2..1.12 आधुनिक साधनों के प्रयोग की चुनौती

अध्याय : चार **97-115**

ऐतिहासिक पर्यटन संबंधी पारिभाषिक शब्दावली : अर्थ एवं निर्वचन

4.1 पारिभाषिक शब्दावली का निर्वचन

4.1.1 भवन निर्माण एवं स्थापत्य कला संबंधी पारिभाषिक शब्द

4.1.2 कला एवं संस्कृति संबंधी शब्द

4.1.3 प्रमुख अधिकारी संबंधी पारिभाषिक शब्द

4.1.4 विभाग संबंधी पारिभाषिक शब्द

4.1.5 कर संबंधी पारिभाषिक शब्द

4.1.6 मुग़लकाल में प्रशासन के मुख्य पदाधिकारी

4.1.7 केंद्रीय प्रशासन में प्रमुख अधिकारी

4.1.8 प्रांतीय प्रशासन में प्रमुख अधिकारी

4.1.9 जिला प्रशासन अधिकारी

4.1.10 मुग़ल क़ालीन भूमि-व्यवस्था संबंधी पारिभाषिक शब्द

4.1.11 धर्म और शिक्षा संबंधी पारिभाषिक शब्द

4.1.12 परिधान व आभूषण संबंधी पारिभाषिक शब्द

4.1.13 सैन्य अधिकारी, सेना और सुरक्षा संबंधी पारिभाषिक शब्द

4.1.14 काव्य-रूप और संगीत संबंधी पारिभाषिक शब्द

4.1.15 समाज और दर्शन संबंधी पारिभाषिक शब्द

4.1.16 सल्तनत कालीन उल्लेखनीय साहित्य

4.1.17 मुग़लकालीन उल्लेखनीय साहित्य

4.1.18 कुछ प्रसिद्ध चित्रकार, संगीतज्ञ और लेखक

4.1.19 अन्य पारिभाषिक शब्द

उपलब्धियाँ और संभावनाएँ

संदर्भ सामग्री सूची

परिशिष्ट